B.A. 2nd Yr.
Uma Pillai
Deptt. of Skt.

तत्पुरुष समास contd.

(a) कुक्कुटमयूर्यौ – लौ० वि० – कुक्कुटश्च मयूरी च, अ० वि० – कुक्कुट + सु मयूरी + सु। 'चार्थे द्वन्द्वः' से समास, 'कृत्तद्धित...' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु...' से विभक्ति का लोप 'कुक्कुटमयूरी'. इस स्थिति में 'परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' सूत्रानुसार उत्तरपद में स्थित 'मयूरी' के समान समस्त पद स्त्रीलिंग में होने से द्विवचन में 'औ' विभक्ति लगाकर 'कुक्कुट-मयूर्यौ' रूप सिद्ध हुआ।

(b) मयूरीकुक्कुटौ – लौ० वि० – मयूरी च कुक्कुटश्च, अ० वि० – मयूरी + सु, कुक्कुट + सु। Same as कुक्कुटमयूर्यौ, कुक्कुट के उत्तर पद में रहने से पुल्लिंग में रूप हुआ।

962. प्राप्तापन्ने च द्वितीयया – 2।2।4

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि 'प्राप्त' और 'आपन्न' शब्द सुबन्त पद के साथ इनका विकल्प से हों तो द्वितीयान्त तत्पुरुष समास होता है। यथा – प्राप्तजीविका एवं प्राप्तो जीविकाम्, अ० वि० प्राप्तजीविकः – लौ० वि० प्राप्त + सु + जीविका + अम्। 'प्राप्तापन्ने द्वितीयया...' सूत्र से समास, 'कृत्त०' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो...' से विभक्ति का लोप, 'प्राप्त जीविका' 'प्रथमा निर्दिष्टं समास...' से उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्वनिपात_ जीविका के स्त्रीलिंग होने के कारण 'परवल्लिंगं...' सूत्र से स्त्री० में होना चाहिए था, किन्तु 'प्राप्तापन्ने...' सूत्रानुसार 'प्राप्त' पद का द्वितीयान्त 'जीविकाम्' के साथ समास होने के कारण विकल्प से निषेध होकर पुल्लिंग होने पर स्वादि-कार्य होकर 'प्राप्तजीविकः' रूप सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner

आपन्नजीविकः – लौ० वि० – आपन्नः जीविकाम्, अ० वि० आपन्न + सु, जीविका + अम् । Same as प्राप्तजीविकः ।

913. अर्धर्चाः पुंसि च – 2।4।31 – अर्धर्च और

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है – अर्धर्च और ऋचा आदि शब्दों का पुल्लिंग और नपुंसकलिंग दोनों में प्रयोग होता है। इसलिए इन शब्दों के दो-दो रूप होते हैं।

यथा – अर्धम् ऋचः (लौ० वि०), अ० वि० अर्ध + सु, ऋचा + सु, यहाँ रूप अर्धर्चः और अर्धर्चम् दोनों रूप सिद्ध होंगे।

इसी प्रकार तीर्थ, शरीर, मंडप, देह, अंकुश, पात्र तथा सूत्र आदि भी दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। सामान्यतः वाक्य प्रयोग में विशेषण वाचक शब्द तथा अव्यय शब्द नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं। यथा – मृदु पचति । प्रातः कमनीयम् ।

प्रश्न –
निम्नलिखित शब्दों का सूत्र निर्देशपूर्वक रूप सिद्ध करें –
(1) कुम्भकारः, राजपुरुषः, अतिमालः, भूतबलिः, रक्तिमानः कुम्भकारः, राजपुरुषः, पूर्वकायः, कुपुरुषः एवं द्विरात्रम् । अहोरात्रः, कष्टाश्रितः, पूर्वकायः, कुपुरुषः एवं द्विरात्रम् ।

(2) निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या करें –
(क) द्वितीया श्रितातीत... (छ) गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ।
(ख) कर्तृकरणे कृता बहुलम् ।
(ग) सप्तमी शौण्डैः ।
(घ) गोरतद्धितलुकि ।
(ङ) अपपरमाङ्० ।
(च) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ।

Scanned with CamScanner